Cosmos An International Journal of Art & Higher Education
A Refereed Research Journal
Vol 8 / No 2 / Jul-Dec 2019 ISSN: 2319-8966

भारत में पत्रकारिता का आरम्भ

*दीप्ति

**डॉ मधु बाला शर्मा

परिचय

मानव सभ्यता के इतिहास में कागज निर्माण एवं मुद्रण तकनीक का आविष्कार और सर्वप्रथम समाचार पत्र निकालने का श्रेय भी चीन को जाता है। चीन में मुद्रित एवं प्रकाशित प्रथम अखबार का नाम 'पीपिंग गजट' या 'तिचाआ' था। यह एक सरकारी प्रकाशन था। श्री कमलापति त्रिपाठी, श्री रामकृष्ण, रघुनाथ खाडिंलकर और श्री एस. नटराजन ने पीपिंग गजट को ही विश्व का पहला समाचार पत्र स्वीकार किया है। यह समाचार पत्र पंद्रह सौ वर्षो तक सफलतापूर्वक निकलता रहा। परन्तु यह समाचार पत्र 1912 में माचू वंश के पतन के बाद बंद हो गया। अतः चीन के मांचू को पहले समाचार पत्र प्रबंधन समूह का दर्जा दिया जा सकता है। भारत में सबसे पहला प्रैस पुर्तगाली मिशनरी द्वारा सन् 1550 ई. में शुरू किया गया था। भारत में आधुनिक अर्थों में समाचार पत्र का प्रारम्भ अंग्रेजी भाषा में किया।

पत्रकारिता सूचना प्राप्त करने एवं उन सूचनाओं का आगे प्रसार करने का कार्य है। पहले पत्रकारिता का संबंध एक संकुचित रूप में समाचार पत्रों के लिए सूचना प्राप्त करने एवं उनके प्रसार से लिया जाता था, लेकिन आधुनिक समय में पत्रकारिता का क्षेत्र एवं भूमिका अलग–अलग क्षेत्रों में देखी जाने लगी है। आज जिस पत्रकारिता को हम समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन एवं इंटरनेट जैसे सशक्त इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों से जानते हैं, पूर्वकाल में यह कार्य शासकों द्वारा अपने कुछ चयनित कर्मचारियों के द्वारा किया जाता था। उस समय सूचना प्रदान करने की प्रकृति एवं उद्धेश्य केवल शासक की भलाई के संबंध में ही कार्य करना था, तत्कालीन समाचार वाहक स्वतंत्रापूर्वक अपनी इच्छा से कार्य नहीं कर सकता था। लेकिन आज पत्रकार स्वच्छंद रूप से अपना कार्य करते हैं। भारत में पत्रकारिता के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम इसके उद्भव और विकास के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

पत्रकारिता का अर्थ

समाज के विचारों और साहित्य की संवाहिका को पत्रकारिता के रूप में जाना जाता है जो समाज और साहित्य के इतिहास में अपना विशेष स्थान बनाकर उसका निर्माण करती है। ग्रंथों में समाहित साहित्य से जो संभव नहीं था वह आज पत्र–पत्रिकाओं के साहित्य ने साकार कर दिखाया है। स्वतंत्रता से पूर्व के पत्र स्वाधीनता संग्राम के लिए अस्त्र और शस्त्र के रूप में प्रयोग हुए, आंग्ल शासकों का कोपभाजन बनकर भारतीय पत्र–पत्रिकाओं ने समाज को नई दिशा प्रदान की। यंग इंडिया, हरिजन, आज, स्वदेश, कर्मभूमि, प्रताप, रणभेरी, सेनापति जैसे अनेक पत्रों ने भारतीय जनता को अत्याधिक प्रभावित किया।

स्वतंत्रता से पूर्व की पत्रकारिता तेजस्विनी, ओजस्विनी, निर्भय, परम न्यायपरायण तथा सर्वत्र पुण्य संचारिणी रही है। महर्षि अरविंद, भूपेन्द्रनाथ दत्त, डॉ. एनी बेसंट, गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल, चितरंजनदास, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आदि अनेक नेताओं ने राष्ट्र की सेवा हेतु पत्रों से अपना नाता जोड़ा। महान साहित्य विशेषज्ञ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, लाल खड्ग बहादुर मल्ल, अम्बिका प्रसार बस, गणेश शंकर विद्यार्थी, प्रताप नारायण मिश्र, मुंशी प्रेमचंद, बाबूराव विष्णु पराड़कर, माखनलाल चतुर्वेदी, लक्ष्मण नारायण गर्दे, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' तथा कृष्णदत्त पालीवाल ने पत्रकारिता को राष्ट्रीय नव जागरण का साधन स्वीकार किया और मिशन के रूप में इसको त्यागशील संघर्षमयी परम्परा का नियामक माना।

साहित्य की समीक्षा

बार्नेट, सी (2004), आज का पत्रकारिता का क्षेत्र आयरिश कलाकार एडवर्ड द्वारा दर्शाया गया है। एग्लस्टन ने "सॉर्टेड आउट टॉक" के रूप में। यह उन सभी चीजों की रिपोर्ट करता है जो व्यक्तियों को उन सभी के विपरीत कब्जा कर लेंगे जो उन्हें जानना चाहिए। मीडिया एक उद्योग की स्थिति प्राप्त की है और यह ब्याज और आपूर्ति की गहरी जड़ें मौद्रिक मानक से करोड़ों की एक बड़ी संख्या में चल टर्नओवर के साथ एक विशाल उद्योग में बदल गया है, फिर भी आश्चर्यजनक यह अभी भी किया जाता है। बहरहाल, मीडिया में और विशेष रूप से समाचार–कास्टिंग में आवश्यक दायित्वों का, उदाहरण के लिए, सत्य का विस्तार करना और सिक्के के दोनों किनारों के बारे में व्यक्तियों को सलाह देना कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें किसी भी कीमत पर अपूर्ण नहीं किया जा सकता है। एक पत्रकार को सामाजिक, उद्देश्यपरक, उचित, उचित और साहसिक होना चाहिए, डेटा का विवरण और अनुवाद करना; शुद्धता, निष्पक्षता, समता और शालीनता की गारंटी।

जोसेफ (2000), मीडिया की नौकरी के इर्द–गिर्द घूमते हैं और बताते हैं कि, 'मीडिया की नौकरी और लेखकों के दायित्वों के संबंध में, दो विचारों ने नकदी को देर से नौकरी और पारस्परिक या प्रतिक्रियावादी नौकरी के रूप में उठाया है। अपने दुश्मन की नौकरी में मीडिया नींव का एक दुश्मन है, जो भी सरकार का प्रकार हो सकता है। इस तरह की नौकरी में दैनिक पत्र और ब्रॉडकास्टिंग फ्रेमवर्क कभी भी सरकार की गतिविधियों, रणनीतियों और परियोजनाओं के प्रति घृणित होते हैं, क्योंकि नींव रखने के लिए हमेशा सावधानी और नाजुक होती है और इसके काम के लिए प्रमुख प्रतिक्रिया होती है। स्तंभकार, टेलीकास्टर्स और निर्माता राज्य के उपक्रमों को चलाने वाली नींव के संबंध में खुले उत्साह के रक्षक कुत्तों के रूप में जाते हैं। दूसरा विचार, जिसमें मीडिया पर आश्रित होने का भरोसा दिया जाता है, इस प्रस्ताव पर कायम है कि चूंकि पत्राचार आज सामाजिक परिवर्तन का एक गहन साधन है, मीडिया को हर बोधगम्य माध्यम से विकास की गति तेज करने में राज्य की मदद करनी चाहिए और यह कर सकता है इसलिए बिना प्रदर्शन कौशल के उपज के और खुद को उप–मीडिया की स्थिति में अपमानित किए बिना।

न्यायमूर्ति आनंद (2005), ने अपने लेख 'अभिव्यक्ति के अवसर की महत्वपूर्णता से लेकर लोकतंत्र तक की अभिव्यक्ति' में कहा है कि, सामान्य समाज, आकार और लोकप्रिय भावना की सलाह देने के लिए मीडिया की भारी तीव्रता सभी के आसपास है। मानव अधिकारों की सुरक्षा और उन्नति के लिए

* *शोधकर्ता, सनराइज यूनिवर्सिटी अलवर*
** *शोध निर्देशक, सनराइज यूनिवर्सिटी अलवर*

इसकी विशाल क्षमता को किसी भी तरह के उच्चारण की आवश्यकता है। मीडिया, प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक, जो बिना किसी भय या समर्थन के रिपोर्ट करता है और सटीकता के साथ निष्पक्षता या तर्क के बिना निष्पक्षता से अन्वेषण करता है, निर्भीक समझ के साथ तर्क "इतिहास" के अंतिम समय पर होता है। इस घटना में कि मीडिया को मूल निवासी द्वारा डेटा और मजबूत करने के तरीकों के रूप में देखा जाता है। एक निर्मित बहुमत वाली शासन सरकार को मीडिया को समाचार और दृष्टिकोण के साहसी ट्रांसमीटर का काम करने की आवश्यकता थी। क्या अधिक है, मीडिया को परिस्थितियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए वास्तविकताओं की जांच करने की क्षमता जैसे एक गार्ड डॉग को खेलने की आवश्यकता है।

पत्रकारिता के विभिन्न स्वरूप

जीवन की विविधता और नए नए साधनों की प्रचुरता ने पत्रकारिता को बहुआयामी बना दिया है। आज पत्रकार अपनी रूचि एवं प्रवृति के अनुसार अपने लिए विशिष्ट क्षेत्रों का चयन कर रहे हैं क्योंकि वर्तमान समय पूर्णतया विशिष्टीकरण की ओर अग्रसर है। पत्रकारिता और स्वतंत्रता का बहुत गहरा संबंध है। मनुष्य की महिमा को कमजोर करने वाली हर प्रकार की पराधीनता के विरूद्ध सशक्त आवाज उठाना ही पत्रकारिता का मुख्य उद्धेश्य है। देश की आजादी की लड़ाई मुख्यतः पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से लड़ी गई। स्वतंत्रता संग्राम को गतिशील बनाने में पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिन्दी पत्रकारिता की शुरूआत 1826 में बंगाल से हुई। 30 मई 1826 को हिन्दी के पहले समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का कलकत्ता से प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम एवं बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में कलकत्ता से अनेक विशेष पत्र पत्रिकाएं हिन्दी के शीर्षस्थ नामचीन पत्रकारों के सम्पादन में प्रकाशित हुई। हिन्दी के अनेक पत्रकारों की साधना भूमि कलकत्ता रही है। इन पत्रकारों ने लोकनायक की भूमिका का निर्वाह करते हुए हमेशा संघर्ष किया। इसी संघर्ष में पत्रकारिता के प्रकाशमान अतीत ने राष्ट्रीयता, जातीयता, संस्कृति भाषा और साहितत्व के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

भारतीय पत्रकारिता की जन्मभूमि कलकत्ता को कहा जा सकता है। भारत में सर्वप्रथम कलकत्ता के उपनगर श्रीरामपुर से मुद्रण कार्य शुरू हुआ था। मुद्रण की सुविधा पत्र प्रकाशन की प्ररेणा बनी। इसी प्रेरणा से भारत में पहला पत्र 'बंगाल गजट आफ कलकत्ता' जेम्स ऑगस्ट हिक्की ने 29 जनवरी 1780 ई. में प्रकाशित किया था। भारत में हिन्दी ने अपने पत्र के माध्यम से हेस्टिंग्स सरकार के प्रशासन की कमियों को उजागर करना शुरू किया। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत में प्रकाशित प्रथम पत्र ने ही पत्रकारिता की सही भूमिका की ओर संकेत किया था। इस पत्र द्वारा हिक्की ने पत्रकारिता की उज्जवल परम्परा की दीवार की पहली ईंट रखी थी। अपने निर्भीक आचरण के लिए न केवल हिक्की वरन उन सभी पत्रकारों को जो न्याय के पक्ष में आवाज उठाते हुए अंग्रेज सरकार की शासन शैली की आलोचना कर रहे थे, सरकार का कोपभाजन बनना पड़ा। हेस्टिंग्स की कटु आलोचना का पुरस्कार हिक्की को जेल यातना के रूप में मिला। उत्तरी अमेरिका निवासी विलियम हुआनी ने हिक्की की परम्परा को समृद्ध किया। 1785 में प्रकाशित 'बंगाल जनरल' जो सरकार का पक्ष समर्थक था, 1791 में हुआनी के सम्पादक बन जाने पर इसने अपन स्वर बदल लिए और सरकार की आलोचना करने लगा। इसके बाद हुआनी ने 'इण्डियन वर्ल्ड' नामक स्वयं का पत्र निकाला। हुआनी की आक्रामक मुद्रा से आतंकित होकर सरकार ने उसे भारत से निष्कासित कर दिया। इस प्रकार हिक्की ने पत्रकारिता के क्षेत्र में जो दीप प्रज्जवलित किया था वो अनवरत जलता रहा। इसी कड़ी में भारतीय पत्रकारों के प्रेरक ओर पत्रकारिता के आदिप्रवर्तक के रूप में राजा राममोहन राय का नाम इतिहास मे स्वर्ण अक्षरों में लिखा हुआ है। इनके मित्र ताराचंद दत्त और भवानी चरण बनर्जी के सम्पादन में प्रथम भारतीय भाषायी पत्र बांग्ला भाषा में 1820 ई. में 'संवाद कौमुदी' नाम से प्रकाशित हुआ। देशी पत्रों और भारतीय पत्रकारिता के रास्ते में अनेक व्यवधान थे। भारतीय पत्रकारिता को अपनी यात्रा के प्रथम चरण में ही सरकारी अंकुश से जूझना पड़ा। विभिन्न बाधाओं और प्रतिकूल माहौल के कारण विभिन्न पत्रों की यात्रा बार–बार अवरूद्ध और स्थगित होती रही किन्तु उस समय के पत्रकारों की निष्ठा के सामने सरकार भी लाचार ही रही और उन्हें उनके मार्ग से हटा नहीं सकी। मुद्रा बदल–बदल कर विभिन्न रूपों में वे अपनी वास्तविक भूमिका का निर्वाह करते रहे और देश प्रेम की भावना विभिन्न प्रतिबंधों के बावजुद कुंठित नहीं हुई।

निष्कर्ष

सांस्कृतिक मूल्यों की पहरेदारी और उन्नति में हिन्दी पत्रकारिता की अग्रणी भूमिका रही है। आज देश के हर क्षेत्र में सांस्कृतिक मूल्यों की अवमानना और अनुशासनहीनता का बोलबाला है। आज की हिन्दी पत्रकारिता की समृद्ध भाषा हिन्दी की शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस दृष्टि से आज की पत्रकारिता की उन्नति पर गर्व किया जा सकता है। जहां तक स्वतंत्रता पूर्व काल के पत्रकारों का प्रश्न है वे स्वभाषा गर्व से स्फूर्त थे। स्वयं की भाषा की उन्नति को वे समग्र उन्नति मानते थे। इसलिए अपनी भाषा की उन्नति के लिए वे निरन्तर जागरूक और क्रियाशील रहते थे।

राजनीतिक और सामाजिक चेतना के क्रमिक विकास के साथ ही स्वतंत्रता पूर्व की हिन्दी पत्रकारिता ने साहित्य संवेदना को ही अपेक्षित दिशा की ओर अग्रसर किया। उस काल की साहित्यिक पत्रिकाएं हिन्दी क्षेत्र के पूरे विवेक और प्रतिभा का सम्पूर्णता से प्रतिनिधित्व करती हैं। स्वतंत्रता के पश्चात भी लगभग एक दशक तक यह परम्परा जीवित हैदराबाद से प्रकाशित कल्पना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं ने साहित्यिक संवेदना को गतिशील और उन्नत करने में विशिष्ट भूमिका का निर्वहन किया। साहित्यिक पत्रकारिता की इतनी समृद्ध परम्परा वाले विशाल क्षेत्र में आज हिन्दी के विवेक और प्रतिभा के समग्र और प्रमाणिक प्रतिनिधित्व करने वाली पत्रिकाओं का सर्वथा अभाव परिलक्षित होता है।

हिन्दी पत्रकारिता का जन्म और विकास प्रतिकूल परिस्थितियों में पराधीन काल की जटिल चुनौतियों के मध्य हुआ था। मगर जितनी विपरीत परिस्थितियां थी उस काल के पत्रकारों की प्रेरणा उतनी ही महान थी। पुराने पत्रकार स्वयं के स्वार्थ से पत्रकारिता से नहीं जुडे थे वरन् उच्च आदर्शो ने उन्हें पत्रकारिता की राह पकड़ने को प्रेरित किया था। पत्रकारिता देश सेवा की उपयुक्त राह थी। देश सेवा एवं देश प्रेम उस काल के पत्रकारों की मुख्य प्रेरणा थी। इस प्रेरणा का मुकाबला साम्राज्यवादी दैत्य से था जो नृशंस शासन तंत्र से ही उसे कुचल देने पर आमादा था। पत्रकारिता की अदम्य शक्ति को कुंठित करने के लिए सरकार तरह–तरह के जटिल कानून बनाती रहती थी। सरकारी अनौचित्य के खिलाफ उठने वाली भारतीय पत्रकारों की आवाज को दबाने के लिए अंग्रेजी सरकार न्याय और

नीति से आंख मूंद लेती थी । इसी अनुदारता के कारण कई पत्रों का प्रकाशन स्थागित कर देना पड़ा था।

आदि काल के पत्रकारों का संघर्ष विभिन्न शक्तियों से था, जिस हिन्दी समाज के जागरण का उद्धेश्य लेकर पत्रों की यात्रा शुरू हुई थी उस समाज में इन पत्रों और आधुनिक ज्ञान को आत्मसात करने का सर्वथा अभाव था। पण्डित युगल किशोर शुक्ल ने 4 दिसम्बर, 1827 ई. के उदन्त मार्तण्ड के अंक में अपनी कठिनाईयों का जिक्र करते हुए लिखा था कि कठोर, परती जमीन को उर्वर बनाने के लिए उन्हें कितनी तपस्या करनी पड़ती थी फिर भी प्रतिकूल परिस्थितियों ने उनकी साध को अधुरा ही समाप्त कर दिया। हिन्दी को आदि पत्रकारों ने हिन्दी समाज के असहयोग की चर्चा अपनी व्यथा के साथ बार–बार की थी। जिनके लिए वे कठिन तपस्या कर रहे थे उन्हीं का असहयोगात्मक रवैया उन्हें व्यथित कर देता था। पत्र को तैयार कर, छापकर अपने ग्राहकों को जाकर पढ़कर सुनाना और समझाना पड़ता था। इस प्रकार ज्ञान की नई रोशनी के लिए अनुकूल माहौल तैयार करना उस काल के पत्रकारों की साधना थी। उस जमाने में पत्रकारिता से जुड़ना नाना प्रकार की यातना को न्यौता देना था। वे ऐसे पत्रकार थे जो अपने धर्म–पत्रकारिता को गतिशील रखने के लिए घर को धान पुआल में मिलाने के सहज उत्साह से प्रेरित थे।

संदर्भ

1. बार्नेट, सी, "मीडिया, लोकतंत्र और प्रतिनिधित्वः जनता को मिलाना, स्पेसेस ऑफ़ डेमोक्रेसी में भौगोलिक दृष्टिकोण, नागरिकता, भागीदारी और प्रतिनिधित्व, वॉल्यूम 45, अंक 12, पीपी 185–206, 2004।
2. जोसेफ, "मीडिया की भूमिका और पत्रकारों के कर्तव्यों के संबंध में", समाजशास्त्र की वार्षिक समीक्षा, वॉल्यूम 25, अंक 54, पीपी 169–190, 2000।
3. जस्टिस आनंद, "फ्रीडम ऑफ एक्सप्रेशन क्रिटिकल टू डेमोक्रेसी", जेंडर–बेस साइबर हिंसा पर राष्ट्रीय संवाद, खंड 2, अंक 13, पीपी 142–753, 2005।
4. रामकृष्णन, "'विनाश विनाश और भारतीय मीडिया", अमेरिकन सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन, वॉल्यूम 69, अंक 1, पीपी 64–92, 2002।
5. प्रसून सोनवॉकर, "औपनिवेशिक क्रूसिबल में भारतीय पत्रकारिता, राजनीतिक विरोध की एक उन्नीसवीं सदी की कहानी, खंड 16, अंक 5, पीपी 3456–6574, 2015।
6. सुश्री कावेरी देवी मिश्रा, "भारत में नागरिक पत्रकारिताः दिल्ली का एक केस स्टडी, जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड सोशल पॉलिसी, वॉल्यूम 1, नंबर 1, पीपी 656–767, 2014।
7. M Deuze, A Bruns, "भागीदारी समाचार का एक उम्र के लिए तैयारी", पत्रकारिता अभ्यास, वॉल्यूम 1, नंबर 3, पीपी 322–338, 2007।